4770

॥ बाल कहानियाँ ॥

(भाग दो)

1159

लेखक
पी० जी० वासुदेव

प्रकाशक
विद्यार्थी मित्रम पब्लिकेशनस,
कोट्टयम ।

स्टानडार्ड आठ केरल हिन्दी सीरीज़ २

॥ बाल कहानियाँ ॥

(भाग दो)

4770

लेखक:
पी० जी० वासुदेव

प्रकाशक:
विद्यार्थी मित्रम पब्लिकेशनस,
कोट्टयम ।

पहला संस्करण
प्रतियाँ एक हज़ार
जून १९५९
सर्वाधिकार
लेखक के अधीन ।

[Fifty Naye Paise]

मुद्रकः
विद्यार्थी मित्रम प्रेस,
कोट्टयम ।

H 770

इस में

		पेज
१.	सहयोग करो	५
२.	सोच कर काम करो	११
३.	बड़ों की बात मानो	१५
४.	बेवकूफ़ न बनो	१८
५.	बराबर वालों से दोस्ती करो	२४

हमारे हिन्दी के अन्य प्रकाशन

१. बाल कहानियाँ (भाग- १)
२. ,, ,, (भाग- ३)
३. आदर्श बालक (भाग- १)
४. ,, ,, (भाग- २)
५. ,, ,, (भाग- ३)
६. आदर्श पुरुष (भाग- १)
७. ,, ,, (भाग- २)
८. ,, ,, (भाग- ३)
९. महान पुरुष — १. महादेव गोविन्द रानडे
१०. ,, ,,— २. बाल गङ्गाधर तिलक
११. ,, ,,— ३. गोपालकृष्ण गोखले
१२. वीर वेलूत्तम्पी
१३. हमारे राष्ट्र नेता
१४. महात्मा गान्धी
१५. हिन्दी पण्डित

A770

सहयोग करो

जाडे का मौसम था ।
कड़ा जाड़ा पड़ रहा था ।
लोग कांप रहे थे ।
जानवर ठिठुर रहे थे ।
सूरज बादलों में छिप गया था ।
सरद हवा चल रही थी ।
पत्थर भी कांप रहा था, ठिठुर रहा था ।

एक घोड़ा सरदी से घबड़ा गया ।
वह कांप रहा था, ठिठुर रहा था ।

जाड़ा बड़ा कड़ा पड़ रहा था ।
उस से सहा नहीं गया ।
वह घर से भाग चला ।

घोड़ा भागा जा रहा था ।
रास्ते में उसे एक कुत्ता मिला ।
वह भी सरदी से घबड़ाया हुआ था ।
उस से भी जाड़ा सहा नहीं गया ।
कुत्ते ने घोडे से पूछा —
"घोड़ा मामा, कहाँ चले ?"
घोडे ने जवाब दिया —
"गरमी की खोज में ।"

कुत्ते ने पूछा —
"क्या, मैं भी साथ चलूँ ?"
घोड़ा तैयार था ।
अब घोड़ा और कुत्ता दोनों भागने लगे ।
वे कुछ दूर आगे बढे तो दौड़ती हुई एक बिल्ली मिली ।

बिल्ली ने पूछा —
"आप दोनों कहाँ जा रहे हैं ?"

कुत्ते को गुस्सा आ गया।
उस ने बिल्ली से कहा—
"यह सरदी, क्या तुम देखती नहीं हो।
हम इस सरदी से बचने जा रहे हैं।"

बिल्ली ने हाथ जोड कर कहा—
"अजी घोडे मामा, ऐ कुत्ते साहब, क्या मैं भी आप के साथ चलूँ?"

कुत्ता यह नहीं चाहता था, उस ने कहा—
"नहीं तुम हमारे साथ नहीं चल सकती।"
लेकिन घोडे के कहने पर उस ने भी मान लिया।

अब घोड़ा, कुत्ता और बिल्ली तीनों एक साथ भागने लगे।
वे भागे चले जा रहे थे।
उन्हें रास्ते में एक मुर्गा मिला।
वह सरदी से ठिठुर रहा था।

तीनों को भागते देख कर मुर्गे ने उन से पूछा—
"आप लोग कहाँ जा रहे हैं?"

मुर्गे का सवाल सुन कर बिल्ली गुस्से से भर गयी और कहा—

"यह सरदी क्या तुम देखती नहीं हो ?
हम इस सरदी से बचने जा रहे हैं ।"

मुर्गे ने उन से प्रार्थना की—
"कृपा कर के मुझे भी साथ ले लें ।
सरदी के मारे मैं भी मरा जा रहा हूँ ।"

बिल्ली उस को साथ ले चलना नहीं चाहती थी, उस ने कहा—
"नहीं, तुम हमारे साथ नहीं चल सकते ।"
लेकिन घोडे और कुत्ते के कहने पर उस ने भी मान लिया ।

अब घोड़ा, कुत्ता, बिल्ली और मुर्गा चारों एक साथ भागने लगे ।
वे भागे चले जा रहे थे ।
उन्हें रास्ते में एक चूहा मिला ।
वह भी सरदी से ठिठुर रहा था ।

चारों को भागते देख कर चूहे ने उन से पूछा—
"आप सब कहाँ जा रहे हैं ?"

चूहे का सवाल सुन कर मुर्गा गुस्से में आ गया, उस ने कहा—
"यह सरदी, क्या, तुम देखते नहीं हो?
हम इस सरदी से बचने जा रहे हैं।"

चूहे ने सब को सलाम कर के कहा—
"दया कर के मुझे भी साथ ले लें।
सरदी के मारे मैं भी मरा जा रहा हूँ।"

अब घोड़ा, कुत्ता, बिल्ली, मुर्गा और चूहा पांचों एक साथ भागने लगे।
वे भागे चले जा रहे थे।
थोडी दूर जाने पर वे एक मैदान में पहुँचे।
मैदान के एक कोने में आग जल रही थी।
उस के चारों तरफ़ बहुत से सियार बैठे थे।
वे बैठ कर आग ताप रहे थे।

पांचों मित्र घोड़ा, कुत्ता, बिल्ली, मुर्गा और चूहा सीधे आग के पास पहुँचे।
घोडे और कुत्ते को, कुत्ते और मुर्गे को, बिल्ली और चूहे को एक साथ आते देख कर सियार घबड़ा गए।

वे जान ले कर वहाँ से भाग निकले ।
अब नये मित्रों को रोकने वाला कोई नहीं था ।
वे आग के चारों ओर बैठ गए और आग तापने लगे ।

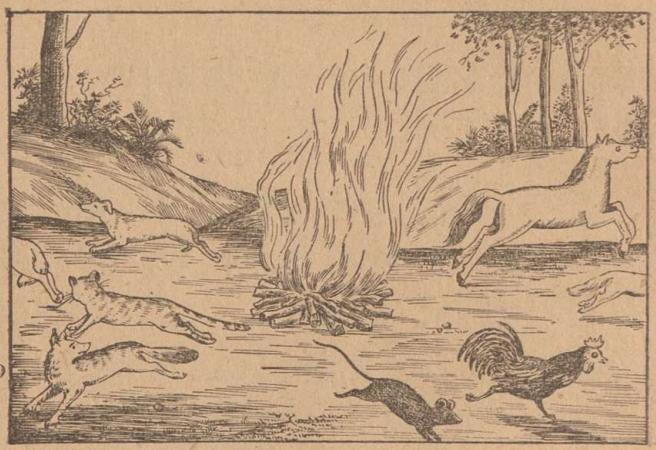

थोडी देर में उन की सरदी भाग गयी ।

"सहयोग का फल अच्छा होता है ।"

सोच कर काम करो

रात का समय था।
आसमान में चांद चमक रहा था।
दुधार चांदिनी सब जगह छिटकी हुई थी।
वह चांदिनी रात थी।

एक सियार जंगल में घूम रहा था।
वह शिकार की खोज में था।
बडी देर तक उसे कोई शिकार नहीं मिला।
आखिर एक छोटी सी बिल्ली नज़र आयी।
अब सियार की खुशी का ठिकाना न रहा।

उस ने बिल्ली से कहा—
"तुम तो बिलकुल छोटी हो, तुम को ले कर मैं क्या करूँ ?
एक बार के लिए भी तुम काफ़ी नहीं हो।
फिर भी दाता ने जो कुछ दिया, उसे मैं कभी नहीं छोड़ूँगा।"

सियार की बातें सुन कर बिल्ली चौंक उठी।
डर के मारे वह कांपने लगी।
लेकिन झट उसे एक उपाय सूझा—
उस ने सियार से कहा—
"सियार साहब, मैं तो एक छोटा सा जानवर हूँ,
मुझे ले कर आप क्या करेंगे ?
उल्टे, आप मेरे साथ चलिए।
मैं आप को अच्छी अच्छी पूड़ियाँ खिलाऊँगी।"

बिल्ली की बातें सियार को अच्छी लगीं।
वह राजी हो गया।

बिल्ली आगे आगे चल रही थी।
सियार उस के पीछे पीछे जा रहा था।
चलते चलते वे एक कुएँ पर पहुँचे।

बिल्ली रुक गयी और पीछे घूम कर सियार से बोली –

"लीजिए, यही पूडियों का घर है।
ज़रा आगे आ कर देख तो लीजिए।
कैसी अच्छी पूडियाँ पडी हैं।"

सियार एक कदम और आगे बढ़ा।
वह अब कुएँ के बिलकुल किनारे खड़ा था।
वह आगे झुका और कुएँ में झाँक कर देखा।
उस ने कुएँ के पानी में चांद की परछाई देखी;
चांदिनी रात तो थी ही?
चांद की परछाई पानी में देख कर सियार ने समझा–
पूडी पडी है।

सियार भूखा तो था ही।
कुएँ में पूडी पडी देख कर उस से रहा नहीं गया।
भूख के मारे वह पागल हो रहा था।
वह अपने को भूल गया।
उस के मुँह में पानी भर आया।
विना विचारे सियार कुएँ में कूद पड़ा।
थोडी देर तक वह पानी में डूबता उतराता रहा।
तैरता रहा, मगर जल्दी ही हाथ पैर बेकाम हुए।

कुएँ में पानी गहरा था ।
आखिर वह पानी में डूब कर मर गया ।

बिल्ली की जान बच गयी ।
उस की खुशी का कुछ ठिकाना न था ।
वह उछलती कूदती अपने घर लौटी ।

"विना विचारे कभी कोई काम नहीं करना चाहिए ।"

बड़ों की बात मानो

किसी जंगल से लगा एक गाँव था।
उस गाँव में एक गडरिया रहता था।
उस के पास बहुत सी बकरियाँ थीं।
उन बकरियों में एक बडी नटखट थी।
वह मनमानी भी अव्वल दर्जे की थी।
वह अपने माँ बाप की भी नहीं सुनती थी।
घमण्ड भी उस में कम न था।

एक दिन की बात है।
सूरज ठीक सिर पर पहुँच गया था।

धूप बडी तेज़ थी।
उस बकरी को बडी प्यास लगी।
प्यास के मारे उस का गला सूखा जा रहा था।
अब उस से रहा नहीं गया।
पास ही एक पहाडी नाला बह रहा था।
बकरी मालिक की आँख बचा कर उस नाले पर पहुँची।
उस के माँ-बाप को भी इस बात की खबर न थी।

घाट में उतर कर बकरी पानी पी रही थी।
पास ही ज़रा ऊपर दूसरा घाट था।
इतने में ऊपर के घाट पर एक चीता पानी पीने आ गया; वह भी बहुत प्यासा था।
और घाट में उतर कर पानी पीने लगा।
"आज पानी मैला क्यों है!
उस ने सिर उठा कर देखा–
नीचे के घाट में एक मोटी ताज़ी बकरी खडी है।
शिकार तो अच्छा है।
चीते ने मन में सोचा–
"ओह! कैसी सुन्दर बकरी है!
मोटी ताज़ी और खूबसूरत!"

चीते के मुँह में पानी भर आया।
"सामने कैसा अच्छा शिकार आ गया है!
इसे कोई छोड़े भी कैसे?"

वह दबे पाँव बकरी के पास चला आया।
उस ने बकरी से पूछा—
"अरे दुष्ट! तू यह क्या कर रही है?
तू ने यह पानी क्यों मैला कर डाला?
मैं अब इसे पिऊँ कैसे?"

चीते को देख सुन कर बकरी बेचारी घबड़ा गयी।
उस ने विनय के साथ कहा—
"मैं ने तो कुछ मैला नहीं कर डाला।
आप मुझ पर काहे को गुस्सा रहे हैं?
पानी ऊँचे से नीचे को बहता है।
आप पानी पी रहे थे ऊपर के घाट में।"

चीता बोला—
"सो तो ठीक है।
मगर साल भर पहले तू मुझे गालियाँ दे कर भाग गयी थी न?"

चीते की झूठी बातें सुन कर बकरी बड़ा दुःखी हुआ, लेकिन करे क्या ?

उस ने कहा –

"बापरो, साल भर पहले मैं पैदा ही न हुई थी।"

चीता बोला –

"अगर तू नहीं थी तो तेरी माँ थी।"

यह कह कर चीता आगे लपका और बकरी पर चढ बैठा।

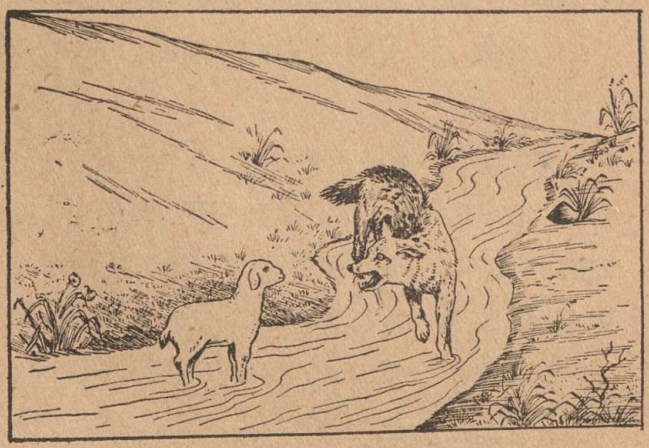

"विना बडों की बात माने किसी को आराम नहीं मिलता।"

4770

बेवकूफ़ न बनो

एक लड़का था।
उस का नाम मोहन था।
मोहन की माँ ने एक दिन उस को एक रोटी का टुकड़ा खाने को दिया।

मोहन रोटी खा रहा था।
वह बरामदे के कोर पर बैठा था।
वह अकेले था।
पास ही एक पेड खड़ा था।
उस की एक शाखा पर एक कौआ बैठा था।

कौए ने देखा —
"मोहन बरामदे के कोर पर बैठा है।
वह अकेला है, उस के पास कोई नहीं है।
उस के हाथ में रोटी का टुकड़ा है।
वह रोटी खा रहा है।
अच्छा मौका है।"

कौए ने एक बार चारों ओर देखा।
कोई आसपास नहीं है।
उस ने मोहन के हाथ से रोटी का टुकड़ा छीन लिया।
मोहन "हा हू" करने लगा।
लेकिन कौआ अब तक बहुत दूर दूसरे पेड पर जा बैठ गया था।

एक सियार शिकार की खोज में घूम रहा था।
वह घूमते घामते उस पेड के तले पहुँचा।
उस ने ऊपर देखा –
"कौआ पेड की शाखा पर बैठा है।
और उस की चोंचों में एक रोटी का टुक़ड़ा दबा है।"

सियार ने अपने मन में कहा—
"ओह! यह मैं क्या देख रहा हूँ।
कौआ चोंचों में रोटी का टुकड़ा दबाए बैठा है।"

सियार अब तक कौए के ठीक नीचे पहुँच गया था।
उस ने देखा– "कौआ वहीं बैठा है।"

उस ने कौए से कहा—
"सलाम, कौआ मियाँ, खैरियत तो है?
आप कैसे खूबसूरत हैं!
इस दुनियाँ में आप के बराबर इतना खूबसूरत और कौन है, मियाँ?"

कौआ मियाँ सियार साहब की बातें सुन कर बड़ा खुश हुआ।
उस खुशी में वह अपने को भूल बैठा।

सियार ने फिर कहा—
"कौआ मियाँ, आप ही दुनियाँ में सब से खूबसूरत हैं।
यही नहीं, मैं ने यह भी सुना है—
आप की आवाज़ भी बडी मीठी है।

मगर इधर बहुत दिनों से मैं ने आप को गाते नहीं सुना ।
कृपा कर के एक गाना सुनाइए भी ।"

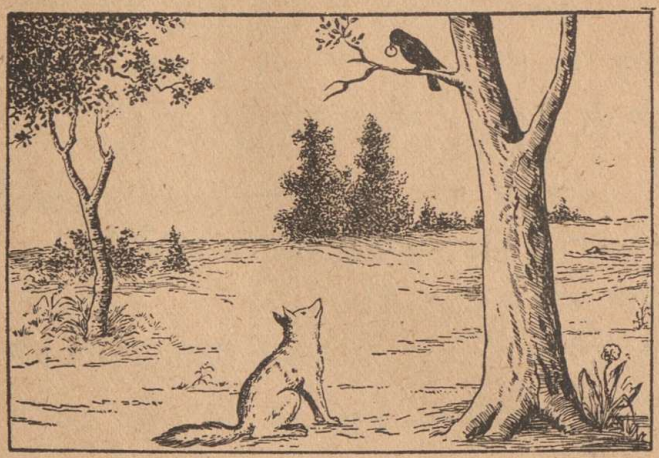

सियार की बातें सुन कर कौए ने अपने मन में कहा—

"यह सियार बड़ा अच्छा मालूम होता है ।
यह अदबी भी कुछ कम नहीं है ।
मेरी खूबसूरती की यह कैसी तारीफ़ करने लगा!
ज़रा मैं गाऊँ तो मेरी मीठी आवाज़ की भी तारीफ़ ज़रूर करेगा ।

यह दुनियाँ भर में घूमता रहता है ।
बातें करने का ढंग भी अच्छा जानता है ।
अगर इस को खुश करूँ तो इस के मुँह से सब
जगह मेरा यश फैल जाएगा ।
तो इस को ज़रा एक गाना सुनाऊँ ।"

कौआ अपने आसन पर कस कर बैठ गया ।
उस ने गाने केलिए अपना मुँह खोला नहीं कि
रोटी का टुकड़ा नीचे आ गिरा ।
सियार तो ऊपर ही देख रहा था ।
उस ने झट उसे अपने मुँह में दबा लिया—
और भाग निकला ।

कौआ अपनी बेवकूफी पर बडी देर तक
पछताता रहा ।

बराबरवालों से दोस्ती करो

एक बार की बात है ।
एक भेडिये और सियार में दोस्ती हुई ।
अब वे दोनों एक साथ रहते थे ।
एक साथ ही वे खाते पीते और चलते घूमते थे ।
लेकिन सियार अपनी इच्छा से कुछ कर नहीं पाते थे ।
उसे भेडिये की इच्छा के अनुसार ही सब काम करने पड़ते थे ।
क्यों कि वह भेडिये से बहुत कमज़ोर था ।

एक दिन भेडिया और सियार दोनों एक साथ

जंगल से कहीं जा रहे थे ।
भेडिये ने सियार से कहा —
"देखो, सियार मियाँ, तुम मेरे लिए कुछ खाना
खोज लाओ; मैं बड़ा भूखा हूँ ।
नहीं तो मैं तुम्हीं को खा लूँगा ।"

"जी," सियार ने जवाब दिया —
"मैं ने एक खेत देख रखा है ।
वहाँ दो बकरियाँ रहती हैं ।
अगर आप चाहें तो हम उन में से एक को पकड़
सकते हैं ।"
भेडिया बड़ा खुश हुआ ।
वे अब खेत की ओर चल दिए ।

भेडिया तो बाहर खड़ा रहा ।
सियार अन्दर चला गया ।
थोडी देर में वह बकरी को चुराए लिए बाहर
आ गया ।
झट भेडिये ने उस को मार कर खा लिया ।
लेकिन वह उस से खुश नहीं हुआ ।
उस ने दूसरी बकरी को भी खा लेना चाहा ।
वह खुद आगे बढा ।

भेडिया बकरियों के घेरे पर पहुँचा ।
वहाँ पहुँच कर उस ने जम्भाई छोडी ।
आवाज़ हुई, बकरी की माँ ने उसे सुन लिया ।
वह चिल्ला चिल्ला कर रोने लगी ।
बकरी का चिल्लाना सुन कर किसान दौड़ा हुआ आया ।
भेडिये ने गरम लाठियाँ खायीं और रोते चिल्लाते सियार के पास वापस आ गया ।

दूसरे दिन भी वे घूमने गये ।
लालची भेडिये ने सियार से कहा —
"मुझे कुछ खाने को दो, नहीं तो मैं तुम्हीं को खा जाऊँगा ।"

सियार बोला —
"मैं ने एक मकान देख रखा है ।
एक औरत वहाँ रहती है ।
वह खूब मिठाइयाँ बनाया करती है ।
चलिए, उधर चलें; ज़रूर कुछ मिल जाएँगी ।"
दोनों उधर चले ।

सियार ने दो एक बार घर के चारों तरफ़ चक्कर लगायी ।

कभी दरवाज़े के छेद से अन्दर देखा तो कभी बू की महक लगाता। आखिर उस ने देखा–
"कई तरह की मिठाइयाँ थाली में सजा कर रखी हैं।"

उस ने उन में से छः मिठाइयाँ चुरा लीं और ला कर भेडिये के सामने रख दीं।

भेडिया बोला–
"यह मेरे लिए काफ़ी नहीं, और चाहिए।"
यह कह कर वह उस मकान में पहुँचा।
जब वह मिठाइयाँ चुरा रहा था उस ने थाली को उलट दिया और नीचे गिरा कर चूर चूर कर दिया।

किसान की स्त्री ने आवाज़ सुनी तो दौडी आयी।

उस ने जब भेडिये को देखा तो अपने नौकरों के लिए आवाज़ दी।

आवाज़ सुनी नहीं कि नौकर सब दौडे हुए आए। भेडिये पर लाठी, जूते, पत्थर सब की बौछार होने लगी।

वह रोते चिल्लाते लंगडाता हुआ वापस आ गया।

भेडिया बोला—

"तुम ने मुझे उन शैतानों के बीच में भेज दिया। घर के लोगों ने मुझे करीब करीब मार ही डाला।"

सियार ने कहा—

"आप को इतना लालची नहीं होना चाहिए था।"

तीसरे दिन वे दोनों फिर बाहर निकले। भेडिया बुरी तरह लगड़ा रहा था।

वह बोला—

"सियार मियाँ, तुम मेरे लिए कुछ खाना खोज लाना।

नहीं तो मैं तुम्हीं को मार कर खा जाऊँगा।"

सियार ने कहा—

"भेडिया साहब, मैं एक कसाई को जानता हूँ। सुअर को मार कर वह उसका मांस पकाया करता है। चलिए, हम उधर चलें; मांस मिल जाएगा।"

भेडिये ने कहा—

"अब की हम दोनों एक साथ चलेंगे।

अगर कोई मुझ पर टूट पडे तो तुम मेरी मदद कर सकोगे।"

दोनों कसाई के यहाँ पहुँचे।
मांस की कुछ कमी नहीं थी।
भेडिये की खुशी का कुछ ठिकाना नहीं था।
वह बोला –
"किसी की आहट पाते ही मैं इसे छोड़ दूँगा।"

सियार भी मज़े से मांस उडा रहा था।
लेकिन वह रह रह कर चारों तरफ़ देखता हुआ खा रहा था।
बीच बीच में वह एक द्वार की ओर दौड़ता और वापस आ जाता।
वे उसी छेद से अन्दर घुस आए थे।
वह यह आजमा भी लेता कि उस का शरीर अब भी उस छेद से सरक सकता है या नहीं।

भेडिये ने यह देख कर पूछा –
"तुम क्यों इस तरह चारों ओर चक्कर लगा रहे हो? क्यों बार बार अन्दर घुसते और बाहर आते हो?"

सियार ने जवाब दिया –

मैं यह देख रहा हूँ कि कहीं कोई आ न धमके। तुम से मैं कहना चाहता हूँ कि कहीं ज़्यादा न खा लें।

भेडिया बोला –

"जब तक थाली खाली न होगी तब तक मैं वापस नहीं जाने का – ।"

इतने में घर का मालिक अन्दर आ धमका। सियार ने उसे देखा नहीं कि वह द्वार से सरक पड़ा और बाहर निकल आया।

भेडिये ने सियार का अनुसरण करना चाहा। मगर उस ने ज़्यादा खा लिया था।

उस का पेट बहुत फूल उठा था।

अब वह उस द्वार से सरक नहीं सकता था।

भेडिये को देख मालिक घबड़ा गया। लेकिन झट उस ने बन्दूक उठा ली और गोली चला दी।

गोली खा कर भेडिया ज़मीन पर उलट पड़ा।

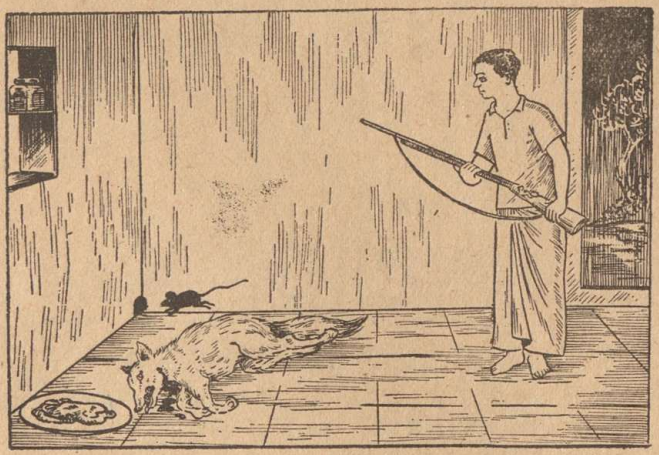

सियार भागा और भाग कर अपने घर पहुँच गया।

वह बड़ा खुश था, क्योंकि लालची भेड़िये से वह किसी तरह बच सका।

"लालची लोगों का साथ कभी न करना।"

दो एक पहेलियाँ

जवाब दोः-

१. विनती करते,
मुझे बुलाते,
मैं जब आते,
घर भग जाते।

जवाबः- वर्षा।

२. हाथ नहीं है,
पैर नहीं है,
द्वार - खिड़कियाँ
खोल रही हैं।

जवाबः- हवा।

३. दो अक्षर का मेरा नाम,
आता हूँ खाने के काम।

जवाबः- आम।

VIDYARTHI MITHRAM PRESS & BOOK DEPOT, KOTTAYAM.

KERALA HINDI SERIES

BAL KAHANIYAM

PART II

By P. G. VASUDEV

Price Rs. 0 . 50

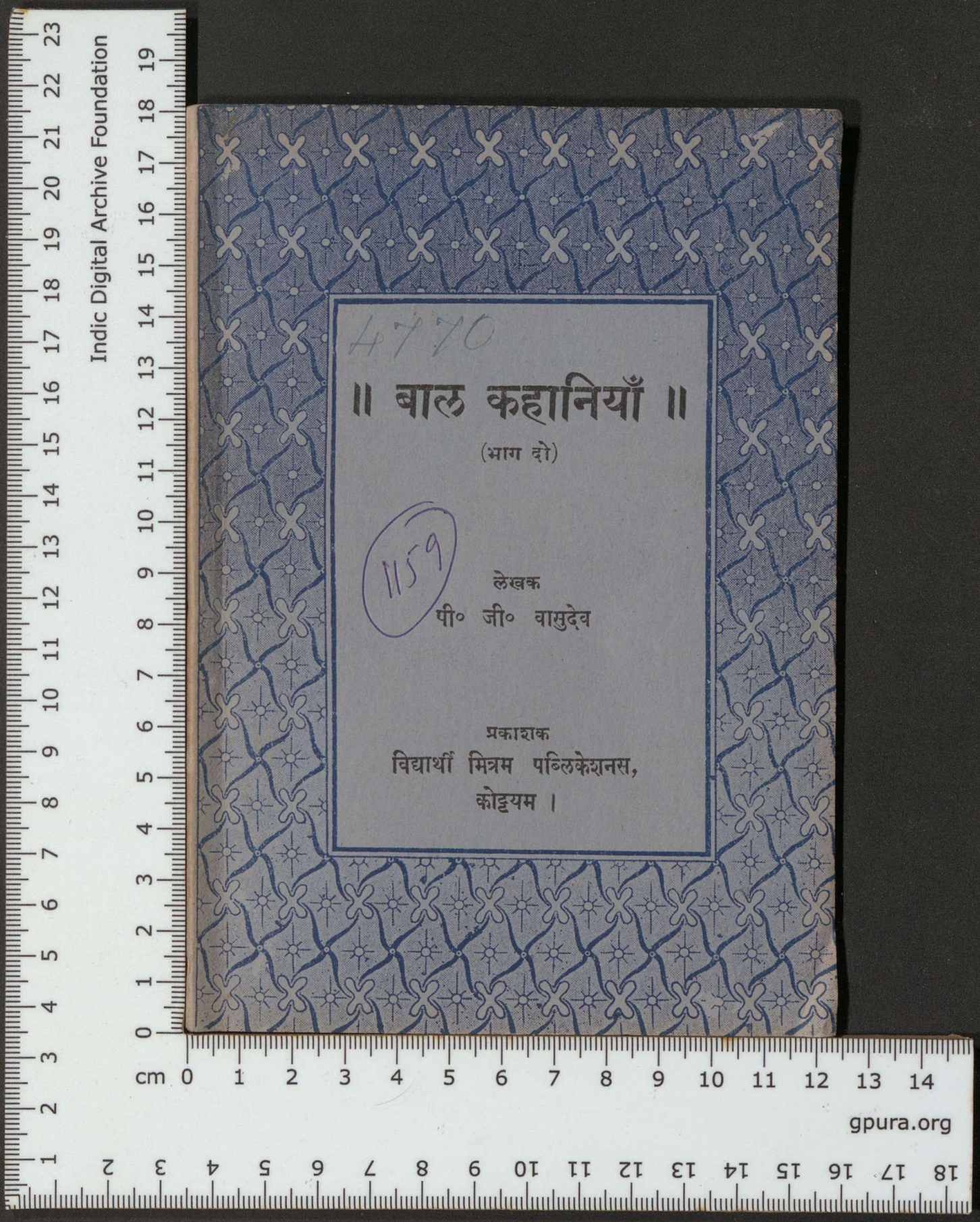

4770

॥ बाल कहानियाँ ॥

(भाग दो)

1159

लेखक
पी० जी० वासुदेव

प्रकाशक
विद्यार्थी मित्रम पब्लिकेशनस,
कोट्टयम ।

Indic Digital Archive Foundation
gpura.org